द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र - सी०सी० - 07

स्नातकोत्तर मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय

प्रो० सत्य नारायण मेहता

चाणक्य महाकाव्य

दीनानाथ पाठक 'बन्धु' द्वारा रचित चाणक्य महाकाव्य मैथिली महाकाव्यक विकास यात्राक एक महत्वपूर्ण कड़ी थिक। हिनक जन्म बेगुसराय जिलाक कुम्हीं गाम मे 1928 ई० मे आ मृत्यु 1962 ई० मे भेल। हिनक पिताक नाम छलनि रामजी पाठक तथा माताक नाम नूनूवती देवी। 'बंधु' जी बेगुसरायक बखरी प्रखण्ड स्थित गौरी शंकर संस्कृत विद्यालयसँ साहित्यक शास्त्री तथा साहित्याचार्य परीक्षोत्तीर्ण भेलाह। कालान्तर मे हिन्दी विद्यापीठ देवघर सँ साहित्य रत्न तथा 1959 ई० मे विश्वविद्यालयसँ हिन्दीसँ स्नातक सेहो कएलनि। ई वृत्तिसँ शिक्षक तथा प्रवृत्तिसँ साहित्यकार एवं पत्रकार छलाह। हिनकामे संगठन क्षमता छलनि आ तेँ ई 'बान्धु परिषद' नामक एक सांस्कृतिक सामाजिक संस्थाक स्थापना कएने छलाह जाहि संस्थासँ अनेक सामाजिक आयोजन होइत छल। ई अपन अल्प जीवन कालहिमे एक मात्र ऐतिहासिक महाकाव्य 'चाणक्य'क आधार पर अमरता प्राप्त कएलनि। कहल जाइत अछि जे एहि महाकाव्यक अतिरिक्त हिनक मैथिली आ हिन्दीमे अप्रकाशित रचना अछि यथा - बरसाइत (उपन्यास) ग्राम देवता (नाटक), मैथिली (खण्डकाव्य), गुरुकुल (हिन्दीनाटक) किछु कहानी, कविता आदि।

'चाणक्य' महाकाव्यक कथानक एहि प्रकारेँ अछि -

" मगध राज्यक राजा नन्दक अत्याचार, भ्रष्टाचार आ ओकर [illegible] नाशक संकल्प, विदेशी आक्रमण सँ सुरक्षा हेतु देशकेँ संगठित करब, नन्दवंशक विनाश कए देशभक्तिसँ परिपूर्ण एवं मानवता के प्रति समर्पित प्रतिभाशाली युवक (चन्द्रगुप्त) केँ मगध राज्यक सिंहासन पर बैसाओल जाइत अछि। तत्पश्चात चन्द्रगुप्तकेँ सेल्यूकसक कन्यासँ विवाहक अनुमति दए 'चाणक्य' अपन जन्मभूमि मिथिला प्रस्थान करैत छथि -

कटि तट कौपिन, काँख तर कृष्णसार मृगछाला।
करमे दर्प कमण्डल शोभित, गर रुद्राक्षमाला।
जटा जूट चन्दनसँ चर्चित भाल स्वच्छ परम वेष।
एखन चलल छथि जन्मभूमिमे वितबए जीवन शेष।

महाकाव्यक लक्षणक संदर्भमे पाश्चात्य एवं भारतीय आचार्य लोकनिक द्वारा अपन-अपन विचार प्रस्तुत कएल गेल अछि, जाहिमे आचार्य विश्वनाथक मत सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानल गेल अछि, हुनका अनुसारें महाकाव्यक लक्षण निम्नलिखित अछि —

(1) आरम्भमे नमस्कार, मङ्गलाचरण, आशीर्वचन रहबाक चाही।

(2) महाकाव्यकें सर्गबद्ध रहबाक चाही।

(3) सर्गक संख्या आठसँ ने तँ कम आओर पन्द्रहसँ ने तँ विशेष रहबाक चाही

(4) नायक धीरोदात्त गुणसँ परिपूर्ण रहबाक चाही।

(5) चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) फल प्राप्ति।

(6) महाकाव्यक कथानक ऐतिहासिक एवं पौराणिक कोनो कथा पर आधारित रहबाक चाही, कवि कल्पित कथानक सेहो रहि सकैत अछि।

(7) श्रृंगार, वीर एवं शांत एहिमेसँ कोनो एक गोट रस अंगी रूपमे अर्थात् प्रधान रूपसँ वर्णित रहबाक चाही, ओकर अतिरिक्त अन्य समस्त रसक वर्णन सेहो रहबाक चाही।

(8) महाकाव्यकें विशाल वर्णन वैभवसँ युक्त रहबाक चाही।

(9) एहि क्रममे प्रकृतिक वर्णन सेहो रहबाक चाही। जेना — संध्या सूर्य चन्द्रमा, रात्रि, पर्वत, वन, सागर आदिक वर्णन तँ रहबेक चाही संगहि जीवन एवं जगतक ओहन प्रत्येक वस्तुक वर्णन रहबाक चाही जकर उपयोग एकटा मानव जीवनमे होइत अछि।

(10) महाकाव्यमे जातीय भावना एवं संस्कृतिक सुन्दर चित्रण रहबाक चाही।

(11) महाकाव्यमे कोनो सार्वभौम सत्यक प्रतिपादन रहबाक चाही ओकर उद्देश्य रूपमे अर्थात् महाकाव्यकें महान उद्देश्य पर आधारित रहबाक चाही। जाहिसँ पाठकगण अपनाकें संस्कृत एवं परिष्कृत कए सकथि।

(12) महाकाव्यमे यथासम्भव उदात्त भाषा-शैलीक उपयोग रहबाक चाही।

Scanned with CamScanner

दीनानाथ पाठक 'बन्धु' द्वारा रचित महाकाव्य 'चाणक्य' मे उपर्युक्त वर्णित महाकाव्यक अधिकांश लक्षण देखबा मे आबैछ। ई लक्षणक अनुसार आठसँ बेशी ग्यारह सर्ग मे निबद्ध अछि। एहि महाकाव्यक कथानक ऐतिहासिक अछि। प्रस्तुत महाकाव्यक नायक इतिहास प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ, त्यागी, विविध शास्त्रक ज्ञाता, कर्त्तव्यनिष्ठ, जननायक, धीरोदात्त गुणसँ सम्पन्न 'चाणक्य' छथि। नायकक नाम पर एहि महाकाव्यक नामकरण भेल अछि।

रसक प्रयोगक सन्दर्भमे डा० शिवशंकर झा 'कान्त' शान्त एवं डा० दिनेश कुमार झा वीर रसकेँ अंगी रसक रूपमे मानैत छथि। ओना शान्त एवं वीर रसक संगहि आन रसक समावेश भेल अछि।

निम्न पाँतिमे वीर रस अभिव्यक्ति द्रष्टव्य —

आरि यवनकेँ मस्तक फोड़ि-फोड़ि, भुजदण्ड प्रबलतम तोड़ि तोड़ि
कऽ शोणित प्लावित भू विमोक हरि निज स्वराष्ट्रक शोक-शोक
सभ क्यो मिलि बल-विस्तार करू, उठू स्वदेश उद्धार करू

प्रस्तुत महाकाव्य विशाल वर्णन वैभवसँ युक्त अछि प्रकृति चित्रणक किछु पाँति देखल जाए —

रात्रि शेष भेल जानि जागरूक, लोक-वेद
दिव्य-लोक-वासिनी सुहासिनी उषापरी
लाल-लाल चोटाट पट ओटसँ तकैत लाग
व्योमकेँ अंगनामे आबि अछि निहारि की

एहि पाँतिमे उषाकालक लालिमा मे प्रेम एवं सौंदर्यक वर्णन भेल अछि। एहिना संध्या, रजनी, दिन, प्रदोष, एवं ऋतुक वर्णन उत्तम रीति सँ कएल गेल अछि। ओना ऋतुक वर्णन उत्तम रीतिसँ कएल गेल अछि। राज सभा ओ राज प्रसादक वर्णन सेहो भेल अछि। मुदा पुत्रोत्सव, यज्ञ, जलक्रीड़ा आदिक वर्णन नहि अछि। एहिमे छन्दक विविधता अछि तथा प्रत्येक सर्गमे छन्दक विविध रूपक प्रयोग भेल अछि। एतबए नहि संस्कृत छन्दक संग-संग नवीन छन्दक प्रयोग सेहो भेल अछि। वार्णिक ओ मात्रिक दुनू प्रकारक छन्दक प्रयोग भेल अछि मुदा सर्गान्तमे सभ ठाम छन्द बदलल नहि छैक। आरम्भ मे देवी-देवताक मङ्गलाचरण नहि छैक अन्तमे भरत वाक्य अछि —

सभ केओ रहथु सुखी तन मन सँ सतत समुन्नत लोक।
करथु ईश कल्याण विश्वकेर जन-जन तनय अशोक॥

Scanned with CamScanner

चाणक्य महाकाव्यमे अलंकारक प्रयोग स्वाभाविक रूप सँ भेल अछि। अलंकार भाषाक रूप-सौंदर्यक विकासमे योगदान दैत छैक। उदाहरण स्वरूप किछु अलंकारक बानगी प्रस्तुत अछि —

अनुप्रास अलंकार — जखन समाज स्वराष्ट्र स्वदेशक
होइछ शिथिल सभ अंग

उपमा अलंकार — करथि नाश रवि तिमिर पुंजकें जहिना प्रातःकाल
शंका संशय छेदि समाजक शासन देत तत्काल

विविध अलंकारक माध्यमसँ कवि जे प्राकृतिक वर्णन कएने छथि ओहिमे कल्पना स्पष्टतः मौलिक एवं नवीन अछि। सरोवरक वर्णनमे कविक कल्पना एवं भाषाक प्रवाह देखू —

'अरुणमे किरण, किरणमे लाली, लालीमे सौंदर्य अपार
सुरमे खग खगमे कलकल रव, कलरवमे मृदु मोदागार
सरमे कमल कमल पर मधुकर, मधुकरमे कलमद गुञ्जार,
तरुमे दल, दल पर कोकिल कल, कोकिलकल कलनाद उचार'

चाणक्यक सम्बन्धमे एतेक कहल जा सकैत अछि जे ओ ऐतिहासिक महान पुरुष छलाह जिनकर प्रभाव सँ ओहि समयमे समस्त भारतमे जागरण ओ एकताक स्वर गुंजयमान भए रहल छल। ओ महान छलाह आ हुनक चरित्रक गान महती काव्य प्रतिभाक संयोग सँ महत काव्य शैलीमे निष्पादित भेल अछि। चाणक्यक उक्ति द्रष्टव्य —

'कान खोलि संसार सुनय से हमर वाक्य अतिशक्य
राजनीतिकेर पृष्ठभूमि पर उतरि गेल चाणक्य'

एहि महाकाव्यक भाषाक महत्वपूर्ण गुण अछि 'ओज' एवं 'प्रसाद गुण'। भावक स्पष्ट अभिव्यक्ति हेतु अनेक स्थल पर लोकोक्तिक प्रयोग भेल अछि —

यथा — (i) गाछक न कुम्हरकेर बतिया सभ आंगुर मात्र देखओने
(ii) नाशक अवसर जखनहि आबैछ विपरीत बुद्धि तखनहि बनैछ

भाषाक प्रवाह निम्न पाँतिमे द्रष्टव्य —

रवि सम दीप्त अनल सम दाहक पवि सम कठिन कठोर।
कोनो गूढ़तम भावमग्न चिन्तासँ आत्म विभोर।
अंग-अंग सँ चूबय टप टप सुदृढ़ आत्म विश्वास।
पाटलिपुत्रक जनपथ पर के घुमि रहल सतत्रास।

Scanned with CamScanner

एहि महाकाव्यमे कवि युगानुकूल अनेक वस्तुक वर्णन आकर्षक रूपमे कएने छथि। विभिन्न वस्तुक परिचयमे कविनव मापदण्ड उपस्थित कएने छथि। एहि प्रकारक वर्णन काव्यक हेतु नव छल। एहि क्रममे वस्तुक परिभाषा द्रष्टव्य अछि—

नेता :— कालकूट घट पीबि सुधारस
जगमे बाँटि सकैछ
मर्त्य लोकसँ देवलोक धरि
नेता ओ कहबैछ

जन-नेता :— विष ज्वाला परिपूर्ण नागफन
चाँपि जे नाचि सकैछ
सैह समाजक अर्थक राष्ट्रक
जन-नेता कहबैछ

भारतीय सांस्कृतिक प्राचीनता, महानता एवं विश्व-व्यापकता भाव निम्न पाँतिमे द्रष्टव्य—

प्रथम सभसँ जगतमे ज्ञान पौलक
सिखौलक मनुजता संसारकेँ जे
कहब हम उत्कर्ष की! एहि देशा के हम
ऋणी अछि पूर्ण रूपेँ विश्वके रजन।

कवि सम्पूर्ण महाकाव्यमे राष्ट्रीय एकताक महत्व केँ स्पष्ट करबाक प्रयास कएलनि अछि। राष्ट्र भावनामे ह्रासक कारणेँ विदेशी आक्रमणक भय प्राप्त भेल अछि। राष्ट्र ध्वजकेँ फहरयबाक हेतु राष्ट्रीय एकता पर बल दैत छथि—

जाग्रत जीवन जन समाज अपनाओत सत्वर
खण्ड राष्ट्रकेर अंग-अंगमे जाग जीवन
एक राष्ट्रकेर महामंत्र फूकत जे नूतन
राष्ट्र पताका उच्च व्योममे हैत सुशोभित

निम्न पाँतिमे देशाक शत्रुक प्रति कविक हुंकार द्रष्टव्य—

अरिमद घट फोड़ि-फोड़ि-युद्ध खेत कोड़ि-कोड़ि
वीर प्रसू आर्य मातृभूमिके पटाउ ओ
यद्यपि छी छोट छोट अरिगण बड़ मोट मोट
हेरि हेरि गोट गोट चोट पर चढ़ाउ ओ

Scanned with CamScanner

नन्दक सभामे अपमानित भेला पर अपन शिखा नहि
बन्हबाक प्रतिज्ञा कैने चाणक्यकेँ देखल गेल —

जनि जैत शिखा ज्वालाक ज्वाला ई शत सुहस्त्रा: फणिमाला
जावत नहि नन्दक करत नाश सम्पूर्ण वंश परिकर समास
तावत नहि बन्धनमे आओत विश्राम शान्ति कोरहन पाओत

भारतीय सांस्कृतिक स्वरूप समन्वय प्रधान अछि। चाणक्य महाकाव्यमे ई भावना स्पष्टत: अभिव्यक्त भेल अछि। धर्म एवं राजनीति, अध्यात्म एवं सांसारिकता आदिक समन्वय प्रदर्शित भेल अछि। चाणक्य अन्तमे चन्द्रगुप्तकेँ सेल्यूकसक अपूर्व सुन्दरी कन्या हेलेना दाइसँ विवाहक आशा ई त आधुनिक विचार अर्थात नीति एवं धर्मक तथा विभिन्न जातिक समन्वय पर जोर देलनि अछि —

जाति कुजाति विजाति युगक अनुरूप बनैछ विलक्षण
सभ दिनसँ होइत आइलें जगतीमे परिवर्तन
विविध जाति पड़ि गेल आर्यमे, साक्षी अछि इतिहास
एहि सम्मिश्रणसँ समाजमे नूतन होइछ विकास

एहि महाकाव्यमे काव्यगत उपादानक अतिरिक्त वर्तमान सामाजिक जीवनक अभिव्यक्ति भेल अछि। एहिमे मानवतावादी एवं व्यवहारवादी जीवन दर्शनक वर्णन भेल अछि। कवि द्वारा सर्वत्र उदात्त जीवन दृष्टि, मानवीय संवेदनाक प्रति निष्ठा, व्यापक मानवीय विश्वास एवं आशावादी कर्ममय जीवनक आस्थाक चित्रण प्रस्तुत महाकाव्यमे भेल अछि। आधुनिक कालक सामाजिक जीवनक कष्ट, संघर्ष, स्वार्थ, सत्ताक प्रति आकर्षणक दुष्परिणाम, भारतीय संस्कृति एवं एकताक प्रति आस्था प्रकट करब आदिक चित्रण करब प्रस्तुत महाकाव्यक उद्देश्य अछि।

एहि प्रकारेँ प्रवाहमय भाषा एवं शैलीक निदर्शनमे अद्भुत चाणक्य महाकाव्य प्रसादगुणसँ युक्त अछि। भारतक गौरवगाथाक संगहि वर्तमान युगक नवीन विचारधारा, धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सम्प्रयोगकेँ अत्यन्त मार्मिक रूपमे चित्रण प्रस्तुत भेल अछि। प्रस्तुत महाकाव्यमे कविक जीवन दर्शन अभिव्यक्त भेल अछि यथा — ईश्वरमे आस्था, विश्वबन्धुत्व, राष्ट्रभक्ति, शौर्य, बाह्य संकटसँ सुरक्षा एवं मानवताक स्थापना अछि।

X

1. 'चाणक्य' एक सफल महाकाव्य थिक। प्रमाणित करू।